IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, March 2022
Impact Factor: 6.252

मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी

पं. रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर, अम्बेडकर नगर उ0प्र0

शोध सारांश– गजानन माधव मुक्तिबोध नई कविता के प्रमुख स्तंभ और प्रगतिशील चेतना के सशक्त कवि हैं। उनका काव्य व्यक्तिवादी छटपटाहट से शुरू होकर गहरी सामाजिक अभिव्यक्ति तक पहुँचता है। मुक्तिबोध के लिए कविता आत्म के अँधेरे को चीरकर सामाजिक यथार्थ तक जाने की प्रक्रिया है।

उनकी सबसे चर्चित लंबी कविता 'अँधेरे में' पूँजीवादी व्यवस्था, मध्यवर्गीय कुंठा और बौद्धिक वर्ग की आत्म–स्वीकृति का दस्तावेज है। इसमें 'मैं' बार–बार खुद से टकराता है, क्योंकि वह अपने चारों ओर फैले शोषण, अन्याय और राजनीतिक पाखंड को देखकर तटस्थ नहीं रह पाता। 'जिन्दगी के कमरे में अँधेरा स्वाभाविक है' कहकर वे व्यवस्था–जनित निराशा को रेखांकित करते हैं। पर यह निराशा पलायनवादी नहीं, बल्कि विद्रोह की भूमिका है।

'ब्रह्मराक्षस' कविता में मुक्तिबोध बुद्धिजीवी वर्ग की त्रासदी दिखाते हैं। ब्रह्मराक्षस वह ज्ञानवान व्यक्ति है जो समाज से कटा हुआ है। मुक्तिबोध की सामाजिक अभिव्यक्ति का तीसरा आयाम फैंटेसी के माध्यम से आता है। वे यथार्थ को सीधे न कहकर प्रतीकों, बिम्बों और स्वप्न–यात्रा से कहते हैं। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में वे सौंदर्य के नाम पर पलायन करने वाली कविता को नकारते हैं। उनके लिए सुंदर वही है जो सामाजिक विषमता को उजागर करे।

मध्यवर्गीय नौकरीपेशा व्यक्ति का अंतर्द्वंद्व, जनतंत्र में आम आदमी की बेबसी, और सत्ता का दमनचक्र उनके काव्य के बार–बार लौटने वाले विषय हैं। मुक्तिबोध आत्म–आलोचना करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि बदलेगा वही जो पहले खुद को पहचानेगा। इस तरह मुक्तिबोध का काव्य केवल 'वैयक्तिक पीड़ा' का नहीं, बल्कि 'सामूहिक पीड़ा' का उद्घोष है।

मूल शब्द– वैचारिकी, वैयक्तिक, अन्तर्विरोधों, तेवर, आवेष्टित, स्निग्ध, तिलस्मी, पिचाशकाय।

मुक्तिबोध प्रगतिशील कवियों में से एक है। प्रगतिशील कवियों की वैचारिक सामानता के बावजूद मुक्तिबोध की रचना अन्य प्रगतिशील विचारों से भिन्न वैयक्तिक विशिष्टता लिए हुई है। साहित्य और कला के क्षेत्र में मुक्तिबोध स्वतंत्र रूप से चिंतन मनन करने के उपरांत अपनी अभिव्यक्त देते हैं, जबकि उनके काव्य में सामाजिक सरोकार की अभिव्यक्ति को लेकर काफी कठिनता रही है और उनके जीवन–दृष्टि और काव्य–दृष्टि के बारे में काफी विवादास्पद स्थिति पैदा होती रही है। मुक्तिबोध एक प्रतिबद्ध और अपने समय के जागरूक कवि रहे हैं। वे विभिन्न पहलुओं पर साहित्य सृजन का कार्य किया उन्हें विश्लेषित करने के क्रम में देखा जाए तो मार्क्सवादी, अस्तित्ववादी, रहस्यवादी, भाववादी, यथार्थवादी, आदि मान्यताओं के अंतर्विरोधों का कवि सिद्ध होते हैं। डॉ0 नामवर सिंह जैसे समीक्षक यह कहते हैं कि ''मुक्तिबोध ने काव्य भाषा को एक नया तेवर दिया है, जो नई कविता की सामान्य काव्य–भाषा की तुलना में काफी अनगढ़ और बेडौल लगती है।'' मुक्तिबोध की रचना प्रक्रिया पर गहराई से विचार किया जाए तो ऐसा लगता है कि मुक्तिबोध का जीवन विभिन्न स्तरों पर लगातार संघर्ष का जीवन रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, March 2022 Impact Factor: 6.252

सामाजिक बदलाव के आंदोलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें किसी ऐसी नौकरी से जुड़ने नहीं दिया, जहां पर उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता। आर्थिक कठिनाइयों से लड़ते हुए स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए सदैव प्रयास करते रहे लेकिन उनका आदर्शवाद और प्रतिबद्धता हमेशा आड़े हाथ आता रहा। मुक्तिबोध जनता के शोषण, अत्याचार और लाचारी को देखते हुए उन सुविधाभोगी भ्रष्टाचारी वर्ग से आगाह कराते हैं, उनमें आत्मविश्वास जगाने का कार्य करते हुए अपनी कविता 'गुंथे तुमसे बिंधे तुमसे' लिखते हैं–

' वेदना में हम विचारों की
गुथे तुमसे
बिंधे तुमसे
वह आवेष्टित परस्पर हो गए
ग ग ग ग
कोई नहीं थे हम तुम्हारे किंतु
सहचर हो गये
चाहे जलधि पर्वत, हजारों मील की दूरी
हमारे बीच में आ जाए
फिर भी मानसिक अदृश्य सूत्रों से
हमारी आत्माएं परस्पर बात करती है[1]

मुक्तिबोध अपनी रचनाओं में उन परिस्थितियों को व्यक्त करते हैं जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से मुक्ति के लिए, जिस आदर्श को लेकर चिंतित हैं, वह राजनीतिक चेतना से अछूता रहकर कभी सम्भव नहीं हो सकता। उनकी वास्तविक की प्रतिबद्धता शोषण उत्पीड़ित विश्व जनता के उधर के महालक्ष्य से जुड़कर एक अत्यंत व्यापक आधार ग्रहण करती है। ऐसे विरोध का कोई अर्थ नहीं जो एकांत में किया जाए। मुक्तिबोध उद्‌बोधन के स्वर में लिखा है–

' समाज के ह्रासग्रस्त भावनाओं के पहरेदार
शोषकों के दालों के स्निग्ध–मृदु चेहरों को देखकर
' ' '' '' ''
उन्हीं के कैंप में ही अपनी खैर– सलामत
मनानेवाले
सज्जनों के सांस्कृतिक आकारों को देखकर
निहार उस क्रोध को
जो मात्र एकांत में ही
शोषण के अत्याचारी जल पर गरजता है।[2]

मुक्तिबोध की कविताओं में तत्कालीन सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति की सजगता अद्‌भुत है। उनका यथार्थ या सामाजिक यथार्थ एक घटना मात्र नहीं है, बल्कि वह सम्पूर्ण जीवन में गुंथा हुआ ऐसा यथार्थ है जिसके कई सरे होते हैं और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 2, March 2022 Impact Factor: 6.252

जिसकी जड़ें बहुत गहराई तक फैली हुई है। मुक्तिबोध इस यथार्थ को गतिशील यथार्थ कहते हैं जिसकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए वह फैंटैसी का इस्तेमाल करते हैं, फलतः उनकी कविताएं दीर्घ होती जाती हैं–'यथार्थ के तत्व परस्पर गुंथित होते हैं, साथ ही पूरा यथार्थ गतिशील होता है। अभिव्यक्ति का विषय बनकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है वह भी ऐसा ही गतिशील होता है, और उसके तत्व भी परस्पर गुंफित हैं। यही कारण है कि मैं छोटी कविताएं नहीं लिख पाता और जो छोटी होती है वह वस्तुतः छोटी ना होकर अधूरी होती है।'[3] मुक्तिबोध अपनी रचनाओं में काट–छॉट करते रहते हैं और जरूरत की चीजों की तलाश करते हैं। भले ही उसका आकार और शब्दों में भिन्न हो जाए। डॉ0 नामवर सिंह शब्द–चयन की दृष्टि से मुक्तिबोध की काव्य भाषा को ऊबड़–खाबड़ मानते हैं।

मुक्तिबोध निश्चित रूप से निम्न मध्यवर्गीय समाज मजदूर शोषितों के पक्ष में खड़े होते हैं, लेकिन उन्होंने जिन बिंबो और प्रतिकों के माध्यम से इस वर्ग के हितों की आवाज उठाई उसमें तिलस्मी खोह रहस्यमय जैसे प्रतीक शब्दों का प्रयोग किया है। अपनी कविता ' अंधेरे में' का उदाहरण इस प्रकार है–

जिंदगी के.....
कमरों में अंधेरे
लगता है चक्कर
कोई एक लगातारय
आवाज पैरों की देती है सुनाई
बार–बार..... बार–बार,
वह नहीं दिखता..... नहीं ही दिखता,
किंतु, वह रहा घूम
तिलस्मी खोह में गिरफ्तार कोई एक,
भीत–पार आती हुई पास से,
गहन रहस्यमय अंधकार ध्वनि–सा
अस्तित्व जनाता
अनिवार कोई एक,[4]

मुक्तिबोध के यहां आत्म–साक्षात्कार आत्म–सत्य से साक्षात्कार है। सच्चा कलाकार आत्म सत्य का अन्वेषण अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों में ही नहीं, वरन उन अनुभूतियों के मूलों मैं करता है, जो समाज और संस्कृति की परंपरा मैं समय रहती है।

मुक्तिबोध स्वयं समीक्षा की ओर एक निश्चित लक्ष्य के साथ उन्मुख हुए हैं, वे अपनी रचनाओं में औद्योगिक व्यावसायिक सभ्यता की मूल में निहित शोषण की नींव पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था पर सर्वाधिक प्रहार किये हैं। समाज में फैली हुई सारी विकृतियों उन सभी पूंजीवादी व्यवस्थाओं की देन है, जो स्वार्थ, उत्पीड़न, अवसरवाद, भ्रष्टाचार, क्षोभ, हताशा आदि मूल रूप से पूंजीवादी, व्यवस्था का भयानक परिणाम है। मुक्तिबोध की रचना 'चांद का मुंह टेढ़ा है' काव्य संग्रह शीर्षक में व्यक्त किया गया है बुद्धिजीवी समाज के स्वार्थी लोगों के चरित्र को प्रस्तुत किया गया है–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, March 2022
Impact Factor: 6.252

' चेहरे भी मेरे जाने–मुझे से लगते
उनके चित्र समाचार –पत्रों में छपे थे
ग ग ग ग
यहां वे देखते हैं भूत–पिशाचकाय
मंत्री भी उद्योगपति और विद्वान
यहां तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात
डोमा जी उस्ताद।'[5]

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' अपनी रचनाओं में सामाजिक अव्यवस्था के साथ–साथ नारी की लाचारी और उसके शोषण का कारण पूंजीवादी सभ्यता को माना है। वह अपने काव्य में शोषित नारी की विवशता और प्रतिरोध ना कर पाने की लाचारी का यथार्थ पर चित्रण प्रस्तुत किया है–

'खूबसूरत कमरों में कई बार
हमारी आंखों के सामने
हमारे विद्रोह के बावजूद
बलात्कार किये गये
नक्षीदार कक्षों में
भोले निर्ब्याज–नयन हिरनी–से।'6

नारी का दूसरा रूप जो मुक्तिबोध के काव्य में उपलब्ध होता है, वह है निम्न वर्गीय लाचार, वेबश, कृशकाय, श्रमशिला नारी का।

मुक्तिबोध के काव्य–शिल्पी है। उनकी रचनाओं की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि पूंजीपतियों, सामंतवादियों द्वारा किया गया शोषण और फैंटेसी, प्रतीक–विधान बिंबो के नए–नए प्रयोग व्यंग्य और नाटकिय शैली में प्रस्तुत किया है। आधुनिक हिंदी कविता के पुरोधा गजानन माधव मुक्तिबोध 'नई कविता' के बेजोड़ हस्ताक्षर हैं।

संदर्भ–

1- नेमीचंद जैन– मुक्तिबोध रचनावली भाग–2– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 संख्या– 27
2- 'मेरे मित्र, सहचर'– मुक्तिबोध ग्रंथावली–पूर्वोध्दृत– पृ0 संख्या– 318
3- गजानन माधव 'मुक्तिबोध'– एक साहित्यिक की डायरी– भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली–पृ0 संख्या– 27
4- अज्ञेय और मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएं– डॉ0 शंभूनाथ त्रिपाठी–अनुराग प्रकाशन वाराणसी– पृ0 संख्या–68
5- गजानन माधव मुक्तिबोध 'चांद का मुंह टेढ़ा है' भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली–पृ0 संख्या– 52
6- चालीसोत्तर हिंदी कविता के हीरक हस्ताक्षर–डॉ0 इला कुमार–भवदीय प्रकाशन अयोध्या–पृ0 सं0–74

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT